

স্বাধীনতা

632

ASIAN ARCHIVES



वै

हउं नमग दश गेय नमः तु ॥ अथ यास कवली साव
लिखात ॥ उविता यला हाशु विलोही कुन कुवि
निष्काल विगी वज्रुदी नाजी डी डी रुट साह
मा ३ ॥ अरु अरु ॥ रायु कु कु सुदया वल दव न कु श
कद वय ॥ अरु न सर्व गाय नू मा न निस्खा जो हय

सव प्र काल न सिध रुयू रु निश्चय न ॥ १ ॥ अरु वद ॥
रायु कु कु थ कार्या सिद्ध साय ना कु म थ रु न स न सादा
हिल न सिद्ध जि एल या थ रुत रु सरय नू माल द अ
या व न द व शं रु न य थ नि याल नू स न थ कार्या
हिन क रु व द धया रु उा ज न या ह न य नि स यान

सिधय ॥ २ ॥ अथ द । लायिद्रु क स धका र्क सिहया
गुलिय गा या कमथ ॥ न स न स सिधल्य भवना का
रु चि ता या ह न्य धका र्क वा हल रुद्र वि मलि द ना
॥ ३ ॥ अथ द ॥ लायिद्रु क धका र्क ना द ना रु न रि रु न
यु धका र्क स ला रु रा य म ह ल्य रु न न म रु य नि भ
न स वृ थ ख ला व ध व स वृ द्दी या न सा कि वि ग म न व भ

गमनया ल तार दय ॥ ४ ॥ अथ द ॥ लायिद्रु क रु न धा
यथा जन वि न ल या दि न य मि ल रु मि वा ध ल य था
स ना ध श स न धका र्क रु ग ल यि व भ रु द व रु न सि व
रु ध या रु य म माल यी पि या स स न ना यी पि या य म न
व स्य व रु ह नि व उ ना डा व धका र्क सि धय ॥ १ ॥

अवय॥ लयिद्रुक्थकार्यरि नक्र विदम्यखथक्रुध
इसर्ववाददवधउआवनइसुतुशनइनथमलाने
मूके वयावलनकारेयागसाभालनाइनसुनग
अनृममथवधवनायलाडावकार्यमसिधत॥७॥
अदय॥ लयिद्रुक्थकार्यसुनिधनशमाथवरुनन

सवाकलशवषकचिहयाडावहनिनसडाथया
इन्यनिसखानसिधयुथवमननेमखडावक्राका
कार्यनासहलथवल्याखयायाजयाडावआवसिधरु
युअन्यथामह॥१॥ अदय॥ लयिद्रुक्थकार्यम
वृत्रिकायागनागुत्रिकनलाकनहसयानअवहना

नमसिधलङ्कृतं दामनशयमनसु दिनलिङ्कृतं
कार्ययाज्ञानसिधशयक ॥ ६ ॥ अथवा। लायुक्तकस। सव
युक्ताननशुदायनशन दामनशयमनसु लङ्कृतमन
याज्ञानविषमकार्यशयुविनरुशनविनरुसमन
वसुशसिनविधानासमलयावकार्यसिद्धशयक ॥ ७ ॥

अथ। लायुक्तकसथकार्यसङ्गावाधामहदथनखन
नरखलधर्मवतशयावसिधशयक अकमनीवसु
तयुसनावशनसनाखशयमात्र ॥ १० ॥ अथ ॥ लायु
क्तकसचिछाचकिलशलथकार्यलिनककथिनश
साधनकदाविनअत्रिगमनशनसाकुअत्रिकन

इत्यथ कार्यलिन क कथिन असा धाद न इतसा क
अत्रिकरुं इव यथेन मसिधव ॥ ११ ॥ अथ यत्न लव क
कस्य धका कसिधिवलना मसिधव ताधकं इति विधि
तम इत्यथ यत्न जमया सयलि हन इत्यथ यत्न यत्न
कस्य सर्वथाय माल समवाकान यत्न इत्यथ ॥ १२ ॥ अ

वव ॥ इत्यथ यत्न कथकार्य विठलया गुति या फ इत्यथ
न इत्यथ यत्न यत्न यत्न यत्न यत्न यत्न यत्न यत्न यत्न
अथ काल इत्यथ यत्न यत्न यत्न यत्न यत्न यत्न यत्न यत्न
यत्न यत्न यत्न यत्न यत्न यत्न यत्न यत्न यत्न यत्न यत्न
यत्न यत्न यत्न यत्न यत्न यत्न यत्न यत्न यत्न यत्न यत्न

गाकाजनतुनि सिधेश्वर ॥ १५ ॥ अथ यत् । लघु
श्रुतमथ कार्यं नमस्तु ताका जगति द्रव्यं भाजा
अथ बहनि वसम धनया दावसता घश्य मालु सि
धेश्वर ॥ १६ ॥ अथ यत् । लघु श्रुतमथ कार्यं न
नानाम सिधेश्वर दवन विकलुदन मात सिधेश्वर

॥ १७ ॥ ॐ त्रिंशु का न दी या उ ग रु ल ॥ । व व द्या श
पृथक् गुलिमनसु त्रिन उद्य न सिधेश्वर मिखा ज्ञान द
शय सुवय काल न द व स त ल द व भक्तु नो स शय मरा
नया गक्तु प्राफ श य निरयने ॥ १ ॥ व द्या । लघु श्रुतम
थ कार्यं अथ वही नया द स न ध कार्यं स विष्णु न म ल उ न

सकुनः शुभाचकया विहृतया वधानं गच्छि नथ
यसुः सुसुनाय गायम न वना कदाचित् वे न द्वातसा
सिद्धं शय ॥ २ ॥ वयद। शयुः कसु सुसुयया इलसा इ
निद्रुनिधानं यलसा राह न नाउथं लारु दयु भवता थ
कार्ये सिधय कथा कुरुश गति न सुन्य मय स नित्रग

मनल्यथ व निरुगया लुसु दवलासर्व रुतिशस
न सुसाष रुसुन्य सिध शयुः ॥ ३ ॥ वदवा। शयुः क
आगमद लउख दीक्याय सुवा सुमासु भवन विना
धयिकुलय ग ना सुविष्मसुया डं वा प्रविष्मसुया डाव
सिधयुः ॥ ४ ॥ वयव। शयुः ककुथवय त वंचइत

८ कचिहयाहनसुवका रूसिद्धशयभवनरुकार्य
भारकयाहसनाभवकनधालसा हवकवयानि श्रव
सुहशयवविष्मसमनवनातवककेश्यकात्र
यायभरुलभवन्यथाकार्यसिद्धयुक्त ॥ १॥ ववद।
शयुक्तकथकार्यकननवडीनियामनसिक्तनया

५ मितयशयुक्तथकार्यकुरुशसनेकिताधचित्त
लयावधानकाशायोहतिनकवयानियाययस्यश
तनाववविष्मसयाहनसिद्धशय ॥ ५॥ ववद। शय
ककसथकार्यमसिधलयकदाचिहसिधमसनता
दतहावतुनिसिधयुगाथधालसानामवात्रमदय

कंटात्रयायमजिअं भवनयथा नानसर्नत्वाय
महावंथथनसिधयुह॥१॥ वदन्। शयुक्कस
थकार्कगमनयायवित्ररथीववनायमितयइ
आख्युलिचिनेयुषयावरननसिधयुति
रुदामनशयमनेवनाशारमयाससिधयु॥६॥

ववय॥ शयुक्कसथकार्कयुतिथकनाथका
यमसिधयुलिगभवनाकार्यचिहायाइने॥७॥
वस्य। शयुक्कसथकार्कसिधयुइरवसिय
इक्कमासिवइरवसइलवैणयिवउगाडावयाइने
इवसनेसिधयुइ॥१०॥ वज्रय। शयुक्कसइति

वृक्षसन् ॥ १२ ॥ व वृक्ष । शयुक्क क स श्व कार्ज्य प्रति अक्ष
 न व क स या दान म सिद्ध ल । न्य गु लि ना म स लि न या व
 समुद्र या न या द ॥ समुद्र स वा द न यी व ऊ ल य य म्मा
 ल किं विं न सि ध ल स नं इ ख श क स य मा ल ॥ १३ ॥ व
 वृक्ष । शयुक्क क स श्व कार्ज्य प्रति अक्ष ना ग थ ध न स

जालसवयकमरु थकार्जसद्वयसयमात्रकस्तु
यनिसलकार्यविघ्नयायचिन्तलयावशत्रुथशत्रुस
नैधर्मशासाशसनगाकालनक्तुनिसिद्धश्य॥१५॥
वज्रदाशयुक्कस्तथकार्यदधयादुनभवयाउवात
मदयकंयादुन्यभवनयागनमद्वयथवयद्विनयादु

व्यर्धयननिग्नयनैसिधय॥१६॥वययाशयुक्क
थकार्जसिद्धयुरुसगावशसनसूवद्विनथकार्यसिध
युरुसुहिरुदधदकंज्ञागाथकार्जनासयायदवनंम
रुना॥१७॥ॐविधातसदकात्रयिरुल॥०॥॥ययय॥
शयुक्कथकार्यसिधयुरुचकचिरुनॐसुदनासक

रं प्रिशसभ गृध्र वगुलान दिन वाधयश्वर्थं सय
लिश्यु सवगकुजिगलपी वनिव कार्जसिद्ध शय्व
॥ १ ॥ यदद। शय्वकु कस थ कार्यस गृध्र द वरय सगुन
विनाधन ज्ञाया वद्वदयु थमव विष्णु समनव नाका
लविलर ननु सिधय ॥ २ ॥ यज्ज्ज्। शय्वकु कस थ

आत्मा विकृतिशयमूमातु थथननन वद्विरु लनाय
थव वृद्ध दव ना सुमर्मा यादु न नाज दवी सूर्यालय
मूमातु सिधय ॥ ३ ॥ यदद। शय्वकु क थ कार्यसुख
नमसिद्ध ल वृद्ध देवनास कं रुग प्रिशसभ वनयादु
न यन उय कालिशसभ विनाधमनल सिधय ॥

॥ ४ ॥ यदद। लाट कृकसुधकार्य हिनके कथिनहा
लसायागमनवना नामलस्य सिद्धयभावनार्का
याइन सुकार्यनालनिवन ॥ ५ ॥ यदव। लाट कृ
क सुकार्यथ कलसनं कृयुन्यवजनयथुइत
सनं सासरुषलन सिधय ॥ ६ ॥ यदय। लाट कृक

स सुकार्यवलतवह सुसिधयधकावलद्वमनथ
कार्जसकृलाग्यदनासुतुशानसनकृशलधनवन
भक्तुदलवसिधय ॥ ७ ॥ यद। लाट कृकस
भवयासागात्रनिधवनकृसनिधानसकृथा
वाताइना। यददनाकृनदसनदय ॥ ८ ॥

रिपब्लिक

632

ASHA ARCHIVES

१५०१३

नृतिव नायकासीयाद् नृविकल्पशयमनव
सिधयुक्त ॥ १७ ॥ निष्ठातुल्यकात्रगुणगुरुव
नियामस्य निष्ठासुसमाय ॥ १८ ॥ सम्यक् ७७७
कातिकुण्डलियवमिकुद्रवासागयाविश्वव्रतन
शुभगलीरवतुसवदाकालीशुरुमनुशुरु ॥

१॥ लिये लयन नैं का ल्य ठा रु ठ लयन नैं नैं सा हा वस्य यांच
~~२॥ लिये लयन नैं का ल्य ठा रु ठ लयन नैं नैं सा हा वस्य यांच~~
२॥ वीन वन म हा ण कि वन णी का त्रि ह का न हा नैं ॥
ध्यान लख जय नये न न क मा चान नान वृ य क म न

ध्यान
नैन

२॥ पाय य या य ल वा दि ने ट क्ति वा न न ल साल स्त्री
सन सु नि वा स हा यि च सि य त मी य हामु गु त्रि ॥
ध्यान लख जय नये मा न स लू य म वा तृ य रु य क या व
२॥ सा रि सा रि म हा सा त्रि णा त्रि मा च नी य नैं रु ठ सा हा
ध्यान लख जय नये नान क चि क न जय न ल यं य थ म

गुय सात्र काउ कमरु या कादय कमरु शत्रा
रुं काठ साहा सब की ठ साहा धात्र न चकन जयय
वासय न्य वा सा क या शला

रुं सा सिद्ध न श्रवण गिणील का मानी वज्र जा गानि

स्य जाला ऊँ हँ की धा न सिध जयत्रय मि सा या क
हाय शत्रा थ उ व स या य जि उ ना

रुं ए हँ सिद्धि मणी यत्र विहा हँ रुद्र साहा ॥ धात्र न कु कल का तु न
ग थि क्रिय ल जि नी हँ १ शक्र न ग्वल न जयल य का राय क थन
क न व व या क्रिय म न शत्रा

ॐ वक्राय नीय ॐ सिद्धि गु ज्ञासा कालि र चिं चिं चूं चूं का न
य सी वक्राय नीय गु ज्ञासा सि न गु न मा हा सू न ना स य र
कं रु रूं सा हा ॥ भाल सा क या ग ख दा सा न व वा य य धा न ॥

ॐ प्र न जी हों कं रु रूं सा हा ॥ धाल १४ य य मि खा सा क या
ख पि व व या धा न ना य य म न ह ना ॥

ॐ वा यि न वि ज ना दा य ला ना सा हा ॥ धाल ३ न ख
ज य ल य व न कं ही क व व या धि य म न ह ना ॥

ॐ नूं हों कं रु रूं सा हा ॥ धा न १ वा क ज य न यं धा न
स क्ष य न व र धा न या ला ग ना य न ध न म द य कं श ना

ॐ अलङ्कारादवधूवा ण थ्यां थ्यां णात्रिमकधयलवाव
नावती ष्वहाङ्गं ॥ साद्र विं कयाकायमननरुता ॥ ७२ ॥

ॐ सहयुधालातथक २सि वधिलहं स्वाहा ॥ धात्र १२
यय ही प्रियमनरुता ॥

ॐ ससासलना

ॐ अलङ्कारादवधूवा ण थ्यां थ्यां णात्रिमकधयलवाव
नावती ष्वहाङ्गं ॥ साद्र विं कयाकायमननरुता ॥ ७२ ॥
मासङ्गां मङ्गयक ॥ ॥ ॐ सालसात्रमहिसात्रिसात्रमात्र
नियस्वाहा ॥ धात्र १२ अयलव्यत्रयतानकसात्रकाथयमनरुता ॥

ॐ ऊँ की विरि विरि विरि मिद जाली ली कैं टै साहा ॥ धात्र नमि
र्या स्या कया मिखा ह्यो इ स्या स्या कया पूय धे मत्र ना ज ख ॥ २
ॐ नीन कंथ म हात ज कैं रुटै साहा ॥ धात्र इ ल ख ज य न
स गा व क क थ स्या क या ना य क म त्र इ ना ॥ गुरु ॥ ८

ॐ सखा सत्र ल म मू धाला ज थ वि दू जालि जा ना का
त्रि दू टि दू क क गा श्री ल थ ही ना थ रु या क न गु तू
कि स ग ती म्य थ रु ग न कू ल म रु वू श्व न वा रा ॥ धात्र न
खि वा हा क या प्र ध गा य म त्र इ ना ॥ गुरु ॥ ९

ॐ वमनवधनाथनवंधनाहृदयवंधनासिद्धिगुत्र
अल्ल ॥ धा ॥ लखजयमानकथनकानवदयाद्वियमनल
ॐ यद्वाहि कं त्याहि कं दिवधचतुर्थकं लागिआ
स अगदहृदयिस्वरुनजात्रवालगाहं यानयि
तुष्टिभार्गनियान सर्ववीहना २ यमथ २ गिसुल्यक

ल २ साहा ॥ यडावमझिठयाणत्रयायमवृशभाव
त्रिसयियावहात्र ॥ ॥ ८
ॐ मय्य रुदवज्जमटंसंरवायसाहा ॥ कानयवया
काहायमवृशत्र ॥ ॥ ८ ॥ ८

ॐ यिसाचयद सर्ववृषनासनिर्कं रुद्रसाहा ॥ वसदी
कयाविखलायमवृशत्र ॥ ८ ॥

ॐ उग्रवनि याल्लवद्वल्लनाथ विष्णवज कथ नावित नाद
रत्रिज कं रुट ॥ धात्र ननु विधान गाला इदू द्या नदह या सूत
गुच क मनु शो ॥ ७ ॥ ॐ ह ह ह निषू २ वक्ष २ निदू दव दव
कनाम नित्वा हा ॥ ना ग नाय मनु ॥ सान यूय शो ॥ ८ ॥

ॐ नभा अगनु यनम रुटाल कं ॐ कौडौ कं कध निर
रुद निर सोष निर कि मि मा न न्य कं रुट ॥ हि ड यन

विज वा कृ जय नय धात्र २ न क कि मि का थय ॥ मनु
ॐ नूद्रा यनि मला नूद्रा हौ रुट सा हा ॥ अवा मा ग्न हा मनु
वव नि या व वन क ॥ अ नि सा ल का थय मनु शो ॥ ८ ॥

ॐ धाध नाम नु यमा न अ स रु का ममान भनी रुद्रि गु नूदि
सकी ॐ स न वा वा ॥ धात्र न यन यौ उ या न गुय मनु शो

五

[illegible]

Handwritten text in Devanagari script, likely a continuation of the previous page's content.

॥ ४ ॥ क उ व ङ ए ऐ
 ए उ ऋ ॠ ऌ ॡ इ ई
 ओ औ ऋ ॠ ऌ ॡ इ ई
 ओ औ ऋ ॠ ऌ ॡ इ ई
 ओ औ ऋ ॠ ऌ ॡ इ ई
 ओ औ ऋ ॠ ऌ ॡ इ ई
 ओ औ ऋ ॠ ऌ ॡ इ ई
 ओ औ ऋ ॠ ऌ ॡ इ ई

मनोकोवर्त्तनाद्यास्तिलरितशेडय
नासप्तनपादुयकागा

॥ १ ॥



